CHETANA
International Journal of Education
Peer Reviewed/Refereed Journal
(ISSN: 2455-8729 (E) / 2231-3613 (P))
Impact Factor
SJIF 2022 = 6.261

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

Research Paper

Received on 01.09.2022
Reviewed on 08.09.2022
Accepted on 15.09.2022

# शाहजहांपुर जिले में उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में सांवेगिक सृजनात्मकता का उनके स्वप्रत्यय के संबंध में अध्ययन

*संत कुमार

## प्रस्तावना

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है तथा उसके जीवन में उपलब्धि महत्वपूर्ण होती है ।वही समाज का निर्माता तथा संरक्षक होता है। यही कारण है कि मनुष्य में के जीवन में शिक्षा एक पौष्टिक पदार्थ है।जिसके द्वारा उसे शक्ति और बल प्राप्त होता है और उसमें शिक्षक एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।समाज और मनुष्य दोनों शिक्षा से विकसित तथा पल्लवित होते हैं और शिक्षा के कारण ही नागरिक को नागरिक अपने कर्तव्य को समझते हैं और अपना उत्तरदायित्व पूरा करते हैं।मनुष्य को शिक्षा के द्वारा ही अपना धार्मिक विकास करने का अवसर प्राप्त होता है। वह शिक्षा ही है जो उसे सामान्य प्राणी से सामाजिक व बौद्धिक प्राणी बनाती है।

वर्तमान जीवन में वर्तमान जीवन में आधुनिक सभ्यता में हम विभिन्न प्रकार के सामाजिक तथा व्यक्तिगत दशाओं में रह रहे हैं । किंतु मानव के सामाजिक और व्यक्तिगत दिशाओं में मानव जीवन हमेशा बदलता रहता है। भावनाएं उनके व्यवहार की क्रिया में बाधा डाल सकती हैं।इसके बाद परिस्थितियों में अच्छा करने की कोशिश करता है।किसी भी परिस्थिति में अपना कार्य कर सकता है। व्यवहार शक्ति पर को दर्शाने की क्षमता और भावनाओं को जानने की क्षमता है। भावना शक्ति प्रदर्शित करने की शक्ति को सांवेगिक सृजनात्मकता कहते हैं।

स्वप्रत्यय शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम रोजर्स द्वारा किया गया। स्वप्रत्ययसे तात्पर्य व्यक्ति के उन सभी पहलुओं एवं अनुभूतियों से होता है,जिससे व्यक्ति अवगत होता है। हालांकि उसका यह प्रत्यक्षण हमेशा सही नहीं होता है। स्वाप्रत्य व्यक्ति के व्यवहार योग्यताओं और गुणों के सम्बन्ध में उसकी अभिवृत्ति,निर्णयों और मूल्यों के योग को ही स्वप्रत्यय कहा जाता है। स्वप्रत्यय दो प्रकार की होती है। पहली आत्म प्रत्यय दूसरी शारीरिक प्रत्यय है। बालक की आयु जैसे -

जैसे बढ़ती जाती है वैसे- वैसे शारीरिक ओर मनोवैज्ञानिक प्रतिभाएं आपस में आत्मीकृत हो जाती है। विद्यार्थी अपने वातावरण के आधार पर स्वप्रत्यय का निर्माण करता है।

सांवेगिकसृजनात्मकता का विचार संवेग के संरचनात्मक दृष्टिकोण पर आधारित है।जिसमेंव्यक्तिगत विकास होता है। संवेग का मुख्य केंद्रीय विचार यह है कि संवेगों की रचना की जाती है।न सिर्फ उन्हें सामाजिक तौर पर नियमित किया जाता है वल्कि उसमें सतही तौर पर परिवर्तन के वजाय आधारभूत परिवर्तन भी होता है। सांवेगिकपरिवर्तन ,संवेगात्मक लक्षण और संस्कृतियों की विभिन्नताओं का विकसित रुप है।यद्यपि परिवर्तन व्यक्तिगत स्तर पर होता है ,और कुछ हद तक प्रत्येक व्यक्ति स्वंय में एक है।नवाचार और परिवर्तन संस्कृतियों में आम तौर पर प्रचलित हैं।

**अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व**

प्रस्तुत अध्ययन की आवश्यकता इसलिए अनुभवकी गयी कि उच्च माध्यमिक स्तर परपढ़ने वाले विधार्थी किशोरावस्थाके मध्य कालमें होते है। इसअवस्था में उनकी व्यक्तिक स्थति अस्पष्टहोती है। तथा उसे स्वंय ही अपने द्वारा की जाने वाली सामाजिक भूमिका के वारे में संभ्रान्ति होती है। इस कारण उनका स्वंय के प्रति दृष्टिकोण यास्वप्रत्यय तथा भावनाओ के साथ किये जाने वाले वर्ताव ,व्यवहार यासांवेगिक सृजनात्मकता में कई निर्मूल धारणाओं तथा पूर्व ग्रहों का प्रवेश हो जाता है। जिससे विधार्थियों के व्यक्तिगत विकास में वाधा उत्पन्न होने लगती है। विधार्थियों की इस मनोदशा पर उनके लिंग,उनको पढ़ाये जाने वाले विषयों तथा सम्बंधित सहपाठियों, शिक्षकों के व्यवहार का भी प्रभाव पड़ता है। अतः अध्ययन में लिंग तथा विषय, वर्ग को बांटकर अधययन करने का प्रयास किया गया ताकि होने वाले निष्कर्षों से इस स्तरपर अध्ययनरत विधार्थियों के सर्वांगीण व्यक्तित्व के विकास के लिए शिक्षा जगत को नए पहलुओं से अवगत कराया जा सके।

**समस्या का कथन**

**शाहजहांपुर जिले में उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में सांवेगिक सृजनात्मकता का उनके स्वप्रत्यय के संबंध में अध्ययन**

**शोध अध्ययन के उद्देश्य**

1. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का उनके स्वप्रत्यय के संबंध में अध्ययन करना।
2. उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र-छात्राओं में सांवेगिक सृजनात्मकता का अध्यनन करना।
3. उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र-छात्राओं में स्वप्रत्यय तथा सांवेगिकसृजनात्मकताकेसहसंबंध का तुलनात्मक अध्ययन करना ।

**शोध अध्ययन की परिकल्पनायें**

1. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का उनके स्वप्रत्यय में कोई सार्थक अंतर नहीं है ।

2. उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र में छात्राओं में सांवेगिक सृजनात्मकता में सार्थक अंतर नहीं है।
3. उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र-छात्राओं में स्वप्रत्यय तथा सांवेगिकसृजनात्मकता केसहसंबंध में सार्थक अंतर नहीं है।

**शोध अध्ययन का सीमांकन**

1. प्रस्तुत अध्ययन में केवल शाहजहांपुर जिले के तीन प्रमुख उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में छात्र एवं छात्राओं को सम्मिलित किया गया है।
2. प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण शोध विधि को सम्मिलित किया गया है।
3. प्रस्तुत अध्ययन में स्वप्रत्यय परीक्षण के लिए सेल्स कांसेप्ट इन्वेंटरी तथा सांवेगिकसृजनात्मकता के लिए इमोशनल इन्वेंटरी का प्रयोग किया गया है।

**संबंधित साहित्य का अध्ययन**

**माथुर** (2000) ने विकलांग तथा सामान्य बालकों की समायोजन समस्याओं उनके स्वप्रत्यय तथा उनकी शैक्षिक उपलब्धियों का तुलनात्मक अध्ययन किया। अध्ययन में 50 विकलांग तथा 16 वर्ष के तथा 50 सामान्य छात्र दसवीं तथा बारहवीं कक्षा के लिए गये। अध्ययन का मुख्य उद्देश विकलांग तथा सामान्य बालकों के स्वप्रत्यय की तुलना करना था।अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि विकलांग बालकों का स्वप्रत्यय सामान्य बालकों से भिन्न था।

**द्विवेदी**(2002) ने कार्यशील महिलाओं के स्वप्रत्यय एवं सामाजिक आर्थिक स्तर का उनके समायोजन पर प्रभाव का अध्ययन किया। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य कार्यरत महिलाओं के स्वप्रत्यय का उनके समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना था। अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि कार्यशील शिक्षित महिलाओं ने अपने कार्य एवं व्यवसाय के प्रति प्रायः सकारात्मक स्वप्रत्ययदृष्टिगोचर होता है। तथा इसके समायोजन पर इनके सकारात्मक स्वप्रत्यय एवं नकारात्मक स्वप्रत्यय तथा सामाजिक आर्थिक स्तर का कोई सार्थक प्रभाव परिलक्षित नहीं होता है।

**रनको** (2007 ने सृजनात्मकता तथास्वप्रत्यय पर अध्ययन किया। 64 स्नातक छात्रों को न्यादर्श के रूप में चुना गया। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य सृजनात्मकता का स्वास्थ्य से संबंध ज्ञात करना था। सह-संबंध अध्ययन के द्वारा निष्कर्ष में मैस्लो (1971)रोजर्स (1961)के सिद्धांतों की पुष्टि हुई जो सृजनात्मकता तथा आत्मअनुभव पर आधारित थे।

**शोध अध्ययन की विधि**

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में सांवेगिक सृजनात्मकता का उनके स्वप्रत्यय के संबंध में अध्ययन करना है। प्रस्तुत अध्ययन में**वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि** का प्रयोग किया गया है।

**अध्ययन की जनसंख्या**

छात्र-छात्राओं के समूचे समूह कोजनसंख्या लिए प्रयोग किया गया है। इसे जनसंख्या कहा गया है।

**प्रतिदर्श चयन विधि**

प्रस्तुत अध्ययन के संदर्भ में शोधकर्ता ने उपलब्ध जनसंख्या में से 60छात्र-छात्राओं का चयन **यादृच्छिक प्रतिदर्श विधि** का प्रयोग किया है।

**अध्ययन के उपकरण**

प्रस्तुत अध्ययन में उपकरण शोधकर्ता द्वारा अध्ययन हेतु "**self concept Inventory (for student)"**अपनेद्वारा निर्मित का प्रयोग किया गया है। तथा□□□□. **Beena Shah** द्वारा निर्मित **Emotional creativity Inventory"** का प्रयोग किया गया।

**प्रयुक्त सांख्यिकी प्रविधियां-1- मध्यमान 2-मानक विचलन 3-टी परीक्षण 4- सहसंबंध गुणांक.**

**तालिका सं0 -1**

चयनित-उच्च माध्यमिक विद्यालयों का विवरण

| क्र.सं | विद्यालय | छात्रों की सं | छात्राओं की सं0 | योग |
|---|---|---|---|---|
| 1 | जनता इंटर कालेज शाहजहांपुर | 10 | 10 | 20 |
| 2 | देवी प्रसाद इंटर कालेज शाहजहांपुर | 10 | 10 | 20 |
| 3 | सरदार पटेल हिन्दू इंटर कालेज शाहजहांपुर | 10 | 10 | 20 |

**परिकल्पनाओं परीक्षण**

**उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र-छात्राओं में स्वप्रत्यय के स्तर का अध्ययन**

H1- के छात्र-छात्राओं के स्वप्रत्यय में सार्थक अंतर है।

H0- छात्र-छात्राओं के स्वप्रत्यय में सार्थक अंतर नहीं है।

**तालिका सं0 -1.1**

छात्र-छात्राओं के स्वप्रत्यय संबंधी प्राप्त अंकों का अध्ययन- मध्यमान, मानक विचलन तथा टी- परीक्षण

| लिंग | संख्या | मध्यमान | मानक विचलन | टी- परीक्षण | सार्थकता स्तर |
|---|---|---|---|---|---|
| छात्र | 30 | 96.7 | 12.09 | 2.5 | सार्थक**अंतर**नहीं है। |
| छात्राएं | 30 | 103.1 | 7.21 | | |

,

तालिका 1.1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि टी टेस्ट का मान 2.5 है जो कि में सार्थकता स्तर 0.01 के सारणीमान 2.66 से कम है, अर्थात मध्यमानों, मानक विचलनों में सार्थक अंतर नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत तथा शोध परिकल्पना अस्वीकृत होती है अर्थात उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का उनके स्वप्रत्यय में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

**छात्र-छात्राओं में सांवेगिक सृजनात्मकता का अध्ययन**

H1-छात्र-छात्राओं कीसांवेगिकसृजनात्मकता में सार्थक अन्तर है।

Ho- छात्र-छात्राओं कीसांवेगिक सृजनात्मकता में सार्थक अन्तर नहीं है।

**तालिका सं0 -1.2**

छात्र-छात्राओं की सांवेगिक सृजनात्मकता संबंधी प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन तथा टी- परीक्षण

| लिंग | संख्या | मध्यमान | मानक विचलन | टी- परीक्षण | सार्थकता स्तर |
|---|---|---|---|---|---|
| छात्र | 30 | 109.5 | 10.85 | 1.79 | सार्थक अंतर नहीं है। |
| छात्राएं | 30 | 105.2 | 7.43 | | |

**छात्र-छात्राओं की संवेगिक सृजनात्मकता**

तालिकासं0 -1.2 के अवलोकन से स्पष्ट है कि टी टेस्ट का मान 1.79 है जो कि सार्थकता स्तर 0. 05 की सारणी मान 1.98 से कम है। अर्थात मध्यमानों, मानक विचलनों में सार्थक अंतर नहीं है, अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत तथा शोध परिकल्पना अस्वीकृत होती है, अर्थात छात्र-छात्राओं के सांवेगिक सृजनात्मकता में अंतर नहीं थी।

**तालिका सं0 -1.3**

**छात्र-छात्राओं में स्वप्रत्यय तथा सांवेगिक सृजनात्मकता के मध्य सह-सम्बंध का तुलनात्मक अध्ययन**

| लिंग | अध्ययन के चर | चरों के मध्य सह-सम्बंध गुणांक |
|---|---|---|
| छात्र तथा छात्राएं | स्वप्रत्यय तथा सांवेगिक सृजनात्मकता | 0.08 |

तालिका 1.2 के अवलोकन स्पषष्ट होता है किछात्र तथा छात्राएं स्वप्रत्यय तथा सांवेगिकसृजनात्मकता के मध्य सह-सम्बंध गुणांक का मान 0.08 है जो कि नगण्य है,नाकारात्मक सह-सम्बंध दिखाता है अर्थात छात्र तथा छात्राओ के स्वप्रत्यय तथा सांवेगिकसृजनात्मकता पर नाकारात्मक सह-सम्बंध है।

## अध्ययन के निष्कर्ष शैक्षिक निहितार्थ तथा सुझाव

### निष्कर्ष

- प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि छात्र-छात्राओं के स्वप्रत्ययमें कोई अंतर नहीं है।उनके स्वयं के विचार था दूसरों के प्रति व्यवहार में छात्र-छात्राओं के आधार पर बिषमताए नहीं पायी गयीं।
- उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में छात्र-छात्राओं का सांवेगिकसृजनात्मकता का स्तर उच्च पाया गया ।तथा उनकी सांवेगिकसृजनात्मकता में छात्र-छात्राओं के आधार पर अंतर नहीं पाया गया है।
- उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र तथा छात्राओं के स्वप्रत्यय एवं सांवेगिकसृजनात्मकता के मध्य सह-संबंध पाया गया है। यह नगण्य ऋणात्मकसह-संबंध है। उच्च स्वप्रत्यय के उच्च होने से सांवेगिकसृजनात्मकता का उच्च प्रदर्शनप्राप्त हुआ है।

### अध्ययन का शैक्षिक निहितार्थ

- माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं का स्वप्रत्यय उच्च स्तर का है। अतः उसको बनाए रखने के लिए उचित शिक्षणवातावरण का निर्माण किया जाये।
- छात्र एवं छात्राओं के आधार पर विद्यार्थियों में भेदभाव नहीं करना चाहिए। अध्यापकों को यह नहीं समझना चाहिए कि बालक की सोच बालिका से अच्छी है ।
- छात्र एवं छात्राओं के आधार पर विद्यार्थियों में भेदभाव नहीं करना चाहिए।अभिभावकों को यह नहीं समझना चाहिए कि बालक की सोच बालिका से अच्छी है ।
- -माध्यमिक विद्यालय में अध्यनरत छात्र-छात्राओं कीसांवेगिकसृजनात्मकता अधिक उच्च स्तर की है। भविष्य में जीवन के लिए उनकी उच्च सफलता प्राप्ति की धोतक है। इस हेतु सरकार को यह प्रयास करना चाहिए कि उनके मार्गदर्शन की समुचित व्यवस्था की जा सके।
- छात्रा,छात्र से कम समायोजनात्मक होती है, यह अध्यापकों तथा अभिभावकों को अपने दिमाग से निकाल देना चाहिए।

### भावी अध्ययन हेतु सुझाव

- स्नातक व परास्नातक के विद्यार्थियों के स्वप्रत्यय एवं सांवेगिक सृजनात्मकता तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
- बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के स्वप्रत्यय एवं सांवेगिक सृजनात्मकता का अध्ययन करने से प्राप्त परिणामों से एन0सी0टी0ई0,यू0जी0सी0, एन0सी0आर0टी0ई0 तथा केंद्र तथा राज्य सरकारों को महत्वपूर्ण सुझाव मिलते हैं ।
- राजकीय गैर-राजकीय विद्यालयों के अध्यापकओं के स्वप्रत्यय एवं सांवेगिकसृजनात्मकताका अध्ययन किया जा सकता है।

**संदर्भ ग्रंथ सूची**

1. श्रीमाली, एस0 एस0 )1994).*शिक्षा मनोविज्ञान पंचम संस्करण.* प्रेम रावत प्रोडक्शन जयपुर

2. कपिल, एच0 के0 )1996).अनुसंधान विधियां ग्यारहवां संस्करण (व्यवहार परक विज्ञान में). एच मार्गन बुक .पी. हाउस, आगरा

3. कपिल, एच0 के0.)1999)सांख्यिकीय के मूल तत्वग्यारहवांसंस्करण विनोद पुस्तक मंदिर आगरा

4. भटनागर, ए0 वी0 )1999) मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन. तृतीय संस्करण राज प्रिंटर मेरठ

5. पाठक, पी0 डी0 )1999)शिक्षा मनोविज्ञान नवीनतम संस्करण विनोद पुस्तक मंदिर आगरा

***Corresponding Author***

*** संत कुमार**

असिस्टेंट प्रोफेसर (शिक्षा विभाग)

ज्योति कॉलेज ऑफ़ मैनेजमेंट साइंस एंड टेक्नोलॉजी बरेली, उत्तर प्रदेश (भारत)

*Email:santkumarrajput80@gmail.com, Mob.-7500093371*